आज़ादी का अमृत महोत्सवः बाल गंगाधर तिलक

सचिन कुमार वर्मा

सहायक आचार्य शिक्षक शिक्षा विभाग धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़, उ0 प्र0

Author Email: profsachinbly@gmail.com

सारांश आज हम भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। यह महोत्सव भारत के शैक्षिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास का एक प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। भारत को विकास के पथ पर अग्रसर करने एवं पथ प्रदर्शन में अनेक महान विभूतियों का योगदान रहा है। भारत की स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेजों से आज़ादी हेतु संघर्ष करते हुए भारतीय समाज को सकारात्मक ऊर्जा देना एवं अखंड और मजबूत लोकतंत्र की नींव हेतु मार्गदर्शन करने में बाल गंगाधर तिलक का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। वर्तमान आधुनिक समाज एवं भारतीय लोकतंत्र में तिलक के शैक्षिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, राष्ट्रवादी एवं वैज्ञानिक विचार आज स्पष्ट परिलक्षित होते हैं।

प्रस्तुत शोध लेख में शोधकर्ता ने शोध की दार्शनिक एवं ऐतिहासिक विधि का प्रयोग करते हुए बाल गंगाधर तिलक के महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व को भारतीय आज़ादी के अमृत महोत्सव के संदर्भ एवं आधुनिक भारत की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द– स्वराज, लोक शिक्षण, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नागरिक अधिकार व कर्तव्य

प्रस्तावना

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी प्रणेता हैं, प्रायः जनमानस उन्हें गरम दल के नेता के रूप में ही पहचानता है। परंतु तिलक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं जिनके विचारों एवं कार्यों की प्रासंगिकता आज के आधुनिकतम भारत में स्पष्ट दिखाई देती है। तिलक के महान संघर्ष, अथक प्रयास एवं राष्ट्रवादी व्यक्तित्व ने भारत को संगठित कर एक नई दिशा दी है । बाल गंगाधर तिलक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन के माध्यम से आधुनिक भारत के स्वरूप को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

तिलक– जीवन परिचय

बाल गंगाधर तिलक का जन्म भारत के पश्चिमी तट पर स्थित रत्नागिरी नामक स्थान में 23 जुलाई 2856 को एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। तिलक के पिता श्रीराम गंगाधर रामचंद्र तिलक व्यवसाय से एक अध्यापक थे और संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। जब तलक 10 वर्ष के थे उनके पिता का स्थानांतरण सहायक शिक्षा निरीक्षक, पुणे के पद पर हो गया। तिलक को पुणे के सिटी स्कूल में प्रवेश मिल गया। तिलक संस्कृत, गणित, व्याकरण में अपनी आयु वर्ग के बालको से अधिक श्रेष्ठ थे। तिलक का विवाह 15 वर्ष की आयु में तपीबाई के साथ हुआ, महाराष्ट्र की पारिवारिक प्रथा के अनुसार तपीबाई का नाम सत्यभामा बाई दिया गया।

तिलक ने 16 वर्ष की आयु में मैट्रिक के परीक्षा उत्तीर्ण कर सन 1873 पूना के डेक्कन कॉलेज में उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश ले लिया। सन 1877 में तिलक ने एल एल बी उत्तीर्ण कर विधि में उपाधि प्राप्त कर ली परंतु उन्होंन वकालत को अपना पेशा नहीं बनाया अपितु अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समार्पित कर दिया।

तिलक आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में

इंडिया डाइजेस्ट नामक पत्रिका में सन 2014 में 'लोकमान्य तिलकः आधुनिक भारत के निर्माता' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें तिलक को भारतीय स्वतंत्रता की नींव रखने वाला बताया। तिलक के महान कार्य एवं राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित होकर महात्मा गांधी ने भी तिलक को आधुनिक भारत का निर्माता के रूप में परिणत किया है।

निःसन्देह तिलक भारत के निर्माता है क्योंकि किसी भी राष्ट्र के निर्माण के लिये वहॉ सम्पूर्ण प्रभुत्व शासन और अपने सरकारी त़ंत्र का स्थापित होना आवश्यक है। तिलक ही पहले स्वत़ंत्रता सेनानी हैं जिन्होंने भारतीय स्वराज की मांग को प्रबल रूप में रखा और समस्त जनसमुदाय स्वतंत्रता आंदोलन के लिये तैयार किया। उन्होंने ही अंग्रेजीं शासन में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी के प्रति प्रेम का बढाया और भारतीय को सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से एकता के धागे में बांधा। उनका भारतीय संस्कृति एवं वेदो के प्रति प्रेम स्वरूप वर्तमान आधुनिक समाज उनकी महान कृतियों के माध्यम से आज भी लाभान्वित हो रहा है जिसका स्पष्ट प्रतिबिंव वर्तमान आधुनिक शिक्षा तंत्र में भी दिखता है।

सामाजिक एवं धार्मिक एकता के समर्थक

तिलक पाश्चात्य आधार पर सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देने के विरुद्ध थे । उनका मानना था की अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष को सफल बनाने हेतु आवश्यक है कि जनता की धार्मिक तथा सामाजिक एकता अक्षुण रखी जाए। तिलक के अनुसार तत्कालीन परिस्थिति में भारत की स्वतंत्रता प्रमुख लक्ष्य रहा। स्वतंत्रता के अतिरिक्त किसी अन्य बात पर ध्यान देने से जनता मुख्य लक्ष्य से हट जाएगी और स्वतंत्रता आंदोलन में रुकावट आ सकती है।

तिलक का विचार था की यदि भारत राजनीतिक रूप से गुलाम रहता है तो वहां के लोग आध्यात्मिक स्वतंत्रता कभी प्राप्त नहीं कर सकते, इस प्रकार उन्होंने हमारी राजनीतिक व्यवस्था को हमारे आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़कर प्रकट किया जिसने लोगों को संगठित किया और स्वराज हेतु एक नई ऊर्जा का प्रसार किया।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

महान शिक्षाशास्त्री के रूप में तिलक ने वास्तविक शिक्षा उसी को माना जो व्यक्ति को जीविकोपार्जन योग्य बनायें तथा जिसके माध्यम से सच्चें नागरिक गुणों का विकास हो और जो भारतीय परम्परा एवं ज्ञान को संचित करते हुए उसका सफल स्थानांतरण में सहयोग करे। उनका विचार था कि शिक्षा जन कल्याण का माध्यम हो, जो देश– राष्ट्र का सम्मान बढ़ाएं, जिससे प्राचीन भारतीय मूल्यों का संरक्षण हो। शिक्षा देश के सभी लोगों को सर्व सुलभ हो और सभी भारतीय शिक्षित बन सके। उन्होंने देश में स्वरोजगार को बढाने हेतु विभिन्न कौशलपरक पाठयक्रमो को भी प्रोत्साहन दिया। तिलक के यह समस्त विचार आज 21 वीं सदी के भारत के विकास रथ में स्पष्ट दिखाई देते हैं जो भारत की राष्ट्र शिक्षानीति 2020 का भी अभिन्न अंग हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में तिलक का योगदान आदित्य है। राजनीतिक जागृति एवं सामाजिक एकता हेतु तिलक शिक्षा के प्रसार को आवश्यक मानते थे। उन्होंने शिक्षा के जिस स्वरूप का चयन किया तथा जो प्रबंधन शैली अपनाई उसका स्थान वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी अनुभव किया जाता है। शिक्षा में उनका योगदान निम्न घटनाओं से दृष्टिगोचर होता–

क. न्यू इंग्लिश स्कूल, पुणे की स्थापना

ख– डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी ,पुणे का निर्माण

ग– फर्ग्युसन कॉलेज, पुणे की स्थापना

घ– डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की आजीवन सदस्यता से त्यागपत्र

डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी का संविधान तिलक और उनके सहयोगी द्वारा विशिष्ट प्रबंधन हेतु लिखा गया है। उन्होंने प्रबंधन की नवीन एवं प्रभावपूर्ण अवधारणा का विकास किया जो विभिन्न कमजोरियों के बावजूद भी उन परिस्थितियों की कसौटी पर सफल रहा।

धार्मिक शिक्षा के समर्थक

बाल गंगाधर तिलक धार्मिक शिक्षा के समर्थक थे। तिलक ने कहा " आज की शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षण का अभाव है। हमें धर्म का परिचय नहीं होता इसलिए हमें धर्म तुच्छ लगता है। इसके अभाव से सुशिक्षित लोग कर्तव्य विमुख होते हैं। अतः हमें धर्म की शिक्षा देखकर इस कमी को दूर करना चाहिए।"

(तिलक, राष्ट्रीय शिक्षण –भाषण, समग्र तिलक खण्ड 6,पृष्ठ 895–902)

एक अन्य भाषण में तिलक ने कहा–" शिक्षा में धन की शिक्षा की भी आवश्यकता है क्योंकि धर्म ज्ञान ना हो तो धर्मा अभिमान नहीं हो सकता और फिर धर्म अभिमान से राष्ट्रीय अभिमान की बात होती है।" (तिलक भाषण ' राष्ट्रीय शिक्षण', बर्शी 3 मार्च 1908 समग्र तिलक खंड 6, पृष्ठ 903–907)

भारतीय स्वतंत्रता के वास्तुकार

बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता के वास्तुकारों में प्रमुख स्थान रखते हैं। उन्होंने ही लोगों को बताया कि स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्होंने लोगों में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जागृत कर देश को एकता रूपी धागे में पिरोया और भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष हेतु तैयार किया। उन्होंने विभिन्न धार्मिक महोत्सव एवं राजनीतिक समझौते के द्वारा हिंदू मुस्लिम एकता को भारतीय स्वतंत्रता हेतु एक सार्थक दिशा दी। तिलक ने अपने जीवन पर्यन्त विभिन्न कार्यो के द्वारा जनता में सामाजिक एकता का विकास किया , लोगों को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का बोध कराया तथा धार्मिक और नैतिक मूल्यों का संवर्धन करा जिसने देश मे स्वराज की भावना की नींव रखी।

तिलक प्रख्यात आदर्शवादी

तिलक एक महान विद्वान थे तथा उन्होंने भारतीय दर्शन में अपने बहुमूल्य विचार विश्व के समक्ष प्रस्तुत किए जो उनके महान आदर्शवादी व्यक्तित्व को दर्शाता है। भारतीय दर्शन दर्शन में उनका मुख्य योगदान दि ओरियन– वेदों प्राचीन कालीन विषय वस्तु में शोध, दी आर्कटिक– वेदों में घर, दी गीता रहस्य तथा वैदिक काल क्रम और वेदांग ज्योतिष आदि है । बाल गंगाधर तिलक ने वैदिक साहित्य हेतु अपने कालक्रम को भी विकसित किया जो निर्णय प्रकार है–

1– प्राचीनतम अवधि 6000 से 4000 ई पू

2–ओरियन काल 4000 से 2500 ई पू

3– कृतिका काल 2500 से 1400 ई पू

4– बुद्ध काल 1400 से 500 ई पू

विद्वान शिक्षक

सुप्रसिद्ध इतिहासकार सरदेसाई जो फर्ग्युसन कॉलेज से निकले विद्यार्थियों में से एक थे, उन्होंने अध्यापक के रूप में तिलक की प्रसन्नता करते हुए कहाः " क्रमचय (परम्यूटेशन) और संयोजन (कांबिनेशन) पढ़ाते समय तिलक रोजमर्रा के जीवन से उदाहरण देकर, विषय को बहुत दिलचस्प बना देते थे। हम लोग उनके सोच में निरीक्षण से बहुत प्रभावित थे। वह विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने से कभी भी विमुख नहीं होते थे। कॉलेज बंद होने पर वे सदा छात्रों के साथ ही पैदल घर जाते थे और रास्ते में उनसे कई विषय पर विचार विमर्श करते थे। किसी भी विषय पर भाषण करते समय में अपने श्रोताओं के साथ बड़ी आसानी से घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लिया करते थे। हम लोगों ने उन्हें कभी भी क्रोध करते हुए नहीं देखा था। उनकी कक्षा में कभी भी कोई हंसी मजाक नहीं होता था।"

राष्ट्रीय पर्वों द्वारा लोक शिक्षण

तिलक की मान्यता थी कि समाज उत्सव धर्मी होता है और उसे रचनात्मक मोड़ देकर लोक शिक्षा का एक मंच तैयार किया जा सकता है। सन 1893 मैं मुंबई में हिंदू–मुस्लिम दंगों के बाद तिलक ने गणपति उत्सव मनाया। तिलक द्वारा इस उत्सव का पुनः आरंभ किसी धार्मिक उद्देश्य से अथवा किसी विशेष धर्म की भावना को ठेस पहुंचाने की दृष्टि से नहीं किया था अपितु इस उत्सव के द्वारा हिंदू समाज को एक निश्चित दिशा देना चाहते थे जिससे लोगों में पारस्परिक सौहार्द की भावना का विकास हो। तिलक ने इस उत्सव को पारिवारिक त्यौहार की संज्ञा ना देकर, सार्वजनिक रूप से मनाने के लिए सभी वर्गो व सभी समुदायों को एक करने का प्रयास किया। तिलक की प्रेरणा से ही मराठा साम्राज्य के जनक शिवाजी महाराज की महान स्मृतियों का पुर्नस्मरण के माध्यम से समाज को ऊर्जा और नवीन चेतना देने के लिए विशाल स्तर पर शिवाजी उत्सव का प्रारंभ सन 1896 में किया गया। तिलक के अनुसार राष्ट्र को तैयार करने हेतु ऐसे उत्सवों को होना आवश्यक है जो सभी के लिए पूज्य हो।

महान लेखक

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एक महान लेखक भी थे। उन्होंने अपनी रचनाओं से सभी को प्रभावित किया। बाल गंगाधर तिलक ने ओरियन तथा आर्कटिक होम अंग्रेजी में लिखें जबकि गीता रहस्य उन्होंने मराठी में लिखा था। उन्हें वेदों से विशेष प्रेम था। उनके अनुसार भगवत गीता जीवन का आधार है जिसमे कर्मयोग के महत्व पर प्रकाश डाला है और इस महान पुस्तक के विचारों के माध्यम से लोगों में स्वराज की भावना और उद्देश्यपूर्ण जीवन का संदेश दिया जा सकता है। तिलक ने अपनी पत्रिकाओं मराठा व केसरी के माध्यम से भी विभिन्न लेख लिखें और सामाजिक व राजनीतिक चेतना का प्रचार प्रसार किया। उनके ज्वलंत और प्रभावपूर्ण आंखों को देखकर ही अंग्रेजों ने उन्हें अशांति का जनक कहा।

व्यावसायिक व प्राविधिक शिक्षा को प्रोत्साहन

तिलक वास्तविक शिक्षा उसी को मानते थे जो व्यक्ति को रोजगार प्रदान करें इसीलिये उन्होंने व्यावसायिक व प्राविधिक शिक्षा को महत्वपूर्ण समझा और पाठयक्रम में सम्मिलित करने की वकालत की। तिलक के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में नेतृत्व क्षमता से समृद्ध भावी पीढ़ी का निर्माण करना है। व्यवसायिक शिक्षा इतनी प्रभावी हो कि व्यक्ति अपने जीवन पर्यंत सक्रिय होकर उस में कार्यरत रहे। व्यवसायिक शिक्षा में तिलक ने व्यवसायिक प्रशिक्षण पर अधिक बल दिया है तथा यह प्रशिक्षण वास्तविक परिस्थितियों में दिए जाने का सुझाव प्रस्तुत किया है जिससे कि शिक्षा एवं उत्पादन का प्रत्यक्ष संबंध स्थापित हो पाए तिलक ने व्यावसायिक शिक्षा का व्यावसायिक प्रबंधन से समन्वय स्थापित करने का भी मौलिक सुझाव दिया। तिलक ने लघु उद्योग के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया उनके विचार से व्यवसायिक शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो छात्र को पैतृक व्यवसाय से जोड़े रखें।

राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थक

तिलक राष्ट्रीय शिक्षा के प्रबल समर्थक थे उनके अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करना है जिसका आधार भारत का गौरवशाली अतीत हो। तिलक के अनुसार शिक्षा से तात्पर्य हमारे प्राचीन भारतीय ज्ञान व सांस्कृतिक मूल्यों को युवा पीढी के विचारों और जीवन शैली में समाहित कर ऐसा परिवर्तन लाना है जिससे हमारे समाज और राष्ट्र का जागरण और पुनर्निमाण संभव हो सके। तिलक का विश्वास था कि राष्ट्रीय शिक्षा के माध्यम से लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास होगा और वह आपसी भेदभाव भूलकर राष्ट्र हित के लिए संगठित हो जाएंगे। तिलक के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा जनता को विदेशी शासन की शोषणकारी नीतियों एवं कुशासन के विरुद्ध जागृत करेगी। तिलक के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा ही लोगों को पाश्चात्य शिक्षा के भ्रम जाल से निकाल सकने में सक्षम है। राष्ट्रीय शिक्षा के बिना भारत के लिए आर्थिक राजनीतिक दासता से मुक्ति पाना असंभव है। मैकाले द्वारा लागू की गई शिक्षा केवल अंग्रेजों हेतु दास रूपी बाबू का निर्माण करती है जो भारत के लिए राष्ट्रीय हानि के बराबर है। तिलक के अनुसार औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा के साथ राष्ट्रीय शिक्षा में भारतीय धर्म शास्त्र के मूल्यों का समावेश होना आवश्यक है। तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा के लिए देशवासियों के लिए मातृभाषा, एक ही लिपि तथा एक राष्ट्रभाषा के विचारों का समर्थन किया । तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा का प्रतिपादन जन जागरण की चेतना पैदा करने, भारत के पुनर्जागरण करने के लिए लिए तथा देश में जीविकोपार्जन के लिए औद्योगिक विकास की परिस्थितियों का निर्माण करने के लिए किया था।

स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण एवं उपयोग को प्रोत्साहन

तिलक ने जीवन पर्यन्त स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण और प्रयोग पर बल दिया जिससे भारतीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिलें और भारतीय लोग आर्थिक रूप से मजबूत हो सकें, जिसके परिणाम स्वरूप विदेश में जाने वाला भारतीय सम्पदा को हम रोक सके तथा विदेशी शासन को कमजोर करने में सहायक हो। तिलक को कुशल आर्थिक नीति का भी ज्ञान था जिसके माध्यम से वह अंग्रजी सत्ता को कमजोर बनाना चाहते थे इसलिये उन्होंने इस आर्थिक नीति को एक राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग किया। तिलक ने निरन्तर अपने भाषणों एवं लेखको के माध्यम से विदेशी वस्तुओं का विरोध करने को प्रोत्साहित किया जिससे लोग स्वदेशी उत्पादन को बल मिलें और भारतीय बाजार मजबूत हो। उन्होंने यह तक कहॉ अगर भारतीय वस्तु विदेशी वस्तु से मंहगी भी हो तब भी सब लोग भारतीय वस्तु को ही क्रय करें, कम मूल्य के कारण विदेशी वस्तुओ का उपयोग न करें। जनता का स्वदेशी अपनाओं का सहयोग ही एक हाथियार के रूप में भारतीय स्वतंत्रता की आग को बल देगा। इस प्रकार तिलक ने जोरदार रूप में जनता से बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन को चलाने को प्रेरित किया।

नागरिक अधिकार एवं कर्तव्य का बोध कराना

तिलक का विचार था कि सभी देश के नागरिकों को अपने कर्तव्यो एवं अधिकारों का ज्ञान होना आवश्यक है। तिलक ने लिखा है–"अशिक्षित देशवासियों को साथ लेकर इसका बोध कराना कि उनके अधिकार क्या है ? सुशिक्षितो का पहला कर्तव्य है अंग्रेजी शिक्षा से यही लाभ लेना चाहिए कि हमारे अधिकार क्या है? हम उन्हें कैसे प्राप्त करें ?" (केसरी,6 अक्टूबर 1903, समग्र तिलक खंड 3, पृष्ठ 199)

तिलक का विचार था कि जो नागरिक शिक्षित होगा वह अपने कर्तव्य एवं अधिकारों के प्रति संवेदनशील होगा और देश एवं समाज के कल्याण लिए सार्थक प्रयास करेगा क्योंकि शिक्षित नागरिक ही स्वराज के वास्तविक महत्व को समझ सकता है और देश की आजादी हेतु सार्थक योगदान दे सकता है।

सच्चें राष्ट्रवाद के प्रतीक

लोकमान्य तिलक सच्चे राष्ट्रवाद के प्रतीक थे। उन्होंने आह्वान किया की स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा। उन्होंने अपने इस निश्चय को साकार करने हेतु जीवन पर्यंत संघर्ष किया और देश के नागरिकों के समक्ष एक सच्चे राष्ट्रवादी का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया।

यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि " वही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने राष्ट्रीय हितों के लिए देश की जनता को जागृत करके सो संगठित किया और उसे जानदार किया।"

निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता

तिलक एक निडर, निर्भीक, निष्पक्ष एवं राष्ट्र प्रेमी पत्रकार थे। उन्होंने अंग्रेजों के कुशासन और शोषणकारी नीति का काला चिट्ठा अपने विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से जनता के सम्मुख रखा और जनता को राष्ट्रप्रेम हेतु जागृत किया। तिलक की लेखन शैली अत्यंत प्रभाव पूर्ण थी जिसने जनता को संगठित करने और स्वराज की भावना का उदय किया। अपने ज्वलंत लेखन शैली के कारण तिलक को कठोर कारावास भी झेलना पड़ा। तिलक ने सन 1881 में अंग्रेजी भाषा में मराठा और लगभग 10 वर्ष उपरांत सन 1891 केसरी पत्रिका का प्रकाशन किया जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास करना, जनता को स्वराज हेतु जागृत करना, शिक्षा में सुधार करना, सामाजिक एकता का विकास करना, लोगों को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का बोध कराना कथा धार्मिक और नैतिक मूल्यों का संवर्धन करना।

भारतीय चिंतन परम्परा के नायक

तिलक भारतीय चिंतन परम्परा के नायक हैं जिनके अथक संघर्ष एवं योगदन के कारण आज हम आजादी के 75 वर्ष आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहें हैं। तिलक का विचार था कि हम विदेशी शासन के कारण अपनी अमूल्य भाषा ,संस्कृति, मूल्यों और स्वराज को खोते जा हैं। स्वराज के बिना सामाजिक सुधारों की कोई प्रासंगिकता नहीं है क्योंकि विदेशी शासन हमें कभी हमें हमारे धर्म व संस्कृति से जुडने नहीं देगा। उन्होंने आध्यात्मिक मूल्यों को राजनीतिक तंत्र के संदर्भ में परिणत कर समाज में भारतीय संस्कृति और मूल्यों के विकास हेतु स्वराज को जंनता के समक्ष रखा। तिलक को वेदो से बहुत प्रेम था इसलिये उन्होंन जन सामान्य में वेदो के निहितार्थ को सरलतम रूप से अपनी विभिन्न रचनओं के माध्यम से प्रस्तुत किया।

निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि भारत की आज़ादी के 75 वर्ष के उपरांत भी वर्तमान संदर्भ में तिलक के ऊर्जावान और भारतीयता से ओतप्रोत विचार आज भी प्रासंगिक हैं जो हमें स्वदेशी वस्तुओ के निर्माण और उपभोग को प्रोत्साहन देते है, जो भारतीय शिक्षा और संस्कृति के पोषक और संरक्षक के रूप में आज भी विद्यमान है, जो भारतीय चिंतन परम्परा के वाहक के रूप में सदैव हमारे साथ है, जिनके विचार राष्ट्रवाद की भावना को जागृत कर देश को एकता रूपी धागे मे बांधने में समर्थ हैं। अन्ततः तिलक के राष्टवादी विचार और आदर्श भारत देश की उत्तरोत्तर प्रगति एवं विकास के पथ पर देश की अखण्ड एकता रूपी धागे में स्पष्ट प्रतिलक्षित हो रहे है।

संदर्भ सूची

1- गुप्त, विश्व प्रकाशन व गुप्ता, मोहिनी(1999), 'लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक', राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ–98

2- जोग0, एन0 जी0 (1997), लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक–9 प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली 01, तृतीय संस्करण, पृष्ठ–4
3- जोग0, एन0 जी0 (1997),वही, पृष्ठ–202
4- वर्मा ,वी0पी0 (2003), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण प्रकाशन आगरा–3, पंचम संस्करण, पृष्ठ–284
5- प्रधान, जी0 पी0, (24–25 जून, 2000), " लोकमान्य तिलक दि पायनीयर ऑफ दी कान्सेप्ट ऑफ नेशनल एजुकेशन", एजुकेशनल थोटस ऑफ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक. एन.सी.टी.ई.
6- पाठक, आर0 पी0 (2012) ,भारत के महान शिक्षाशास्त्री. नोएडाः डॉलिंग किंडरस्ले इंडिया, प्रा0लि0 पृष्ठ– 61–62
7- साठे, शान्ता, (1994), लोकमान्य तिलकः हिज सोशल एण्ड पॉलिटीकल थॉट, अजन्ता पब्लिकेशन, मल्कागंज, दिल्ली
8- प्रधान, जी0पी0, एण्ड भागवत, ऐ0के0. (1959),लोकमान्य तिलकः ए बायोग्राफी, जैको पब्लिशिंग हाउस, बम्बई
9- शर्मा, अमित. (2011). बालगंगाधर तिलक एवं उनके शिक्षा दर्शन. विद्यार्थी अध्ययन एवं अनुसंधान जर्नल, 1(2), 20–26.
10- मेहंदीरत्ता, डॉ. कुलदीप.(2022). लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का शिक्षा दर्शन. राष्ट्रीय शिक्षा
11- https://rashtriyashiksha.com/education-philosophy-of-lokmanya-bal-gangadhar-tilak/